विषय-सूची ।

भूमिका १९

प्रथम भाग—ज्ञान ।

उपक्रमणिका १

१—ज्ञाता ।

ज्ञाताका लक्षण—हम कौन हैं और हमारा स्वरूप क्या है, यह जाननेकी आवश्यकता—देह और देही दोनोंकी भिन्नता—भिन्नतामें सन्देह—सन्देहका निराकरण ३

आत्माका स्वरूप, उत्पत्ति और स्थिति ज्ञानगम्य न होने पर भी विश्वासगम्य है ९

ज्ञान और विश्वासमें प्रभेद—आत्मा ब्रह्मका अंश है—आत्माकी उत्पत्ति स्थितिके सम्बन्धमें अनेक मत—ज्ञाताकी शक्तियोंके जाननेके उपाय १०

२—ज्ञेय ।

ज्ञेयका लक्षण—आत्मा और अनात्मा—ज्ञातासे ज्ञेय या ज्ञेयसे ज्ञाता ?—अभिव्यक्तिवाद कहाँतक ठीक है ?—जगद्विषयक ज्ञान भ्रान्त है या वास्तव ? १६

पश्चिमी तार्किकोंके मतसे ज्ञानके तीन नियम २१

कार्यकारण सम्बन्ध भी ज्ञेय विषय है—त्रिगुणतत्त्व—ज्ञेय या पदार्थका प्रकारनिर्णय २२

३—अन्तर्जगत् ।

अन्तर्जगत्का स्वरूप—संज्ञाके बाहर भी ज्ञानकी परिधि है—आत्मज्ञान और आत्मा अनात्माका भेदज्ञान—इन्द्रियाँ और उनकी जुदा जुदा क्रियायें—इन्द्रियस्फुरणद्वारा प्रत्यक्षज्ञान—अन्तर्जगत्की अन्यान्य क्रियायें २७

स्मृतिके विषय, कार्य, नियम और उसकी ह्रासवृद्धि ... ३२

कल्पनाके विषय, नियम—बुद्धिके कार्य—ज्ञात विषयोंका श्रेणीबद्ध करना—वस्तुओंका जातिविभाग—जाति क्या केवल नाममात्र है—नाम या शब्द या भाषा विषयोंके सोचनेमें सहायक हैं ... ३६

भाषाकी सृष्टि कैसे हुई ?—भाषाके कार्य ४०

श्रेणीविभागके नियम—ज्ञातविषयोंसे नूतन विषयोंका निरूपण—समान्य और विशेष अनुमान ४३

स्वतःसिद्ध तत्त्व, निर्विकल्प और सविकल्प ज्ञान और उनके कारण—अनुमानके नियम ४६

कर्तव्याकर्तव्यनिर्णय—अनुभव—स्वार्थपर और परार्थपर भाव—षड्रिपु—स्वार्थ परार्थका विरोध और मिलन—सुखदुःख ... ५०

इच्छा—प्रवृत्ति और निवृत्ति—निवृत्तिमार्गगामीकी प्रधानता—मनुष्यकी पूर्णताका लक्षण—प्रयत्न या चेष्टा—कर्ता स्वतंत्र नहीं है—कर्त्ताका प्रकृतिपरतंत्रतावाद ५४

४—बहिर्जगत् ।

इस अध्यायका आलोच्य विषय—बहिर्जगत् और तद्विषयक ज्ञान यथार्थ है या नहीं ?—बहिर्जगत्का उपादान—इस विषयमें अनेक मत—बहिर्जगत्के ज्ञान और ज्ञेय वस्तुके स्वरूपका सम्बन्ध ६२

बहिर्जगत्के विषयोंका श्रेणीविभाग—बहिर्जगत्के विषयमें कुछ विशेष बातें—ईथरकी गति—गतिका कारण शक्ति और शक्तिका मूल चैतन्यकी इच्छा—जीवजगत्की क्रिया—क्रमविकाश या विवर्तवाद ७१

जीवजगतकी क्रियायें—अज्ञान और सज्ञान—जगत्की गति और स्थितिका आवर्तन—जगत्में शुभाशुभका अस्तित्व—जगत्में अशुभ क्यों है ?—अशुभका प्रतिकार है या नहीं ? ७९

५—ज्ञानकी सीमा ।
अन्तर्दृष्टिकी शक्ति सीमाबद्ध है—इन्द्रियोंकी शक्ति भी वैसी ही है—'क्या' और 'क्यों' इन दो प्रश्नोंका उत्तर—विषयका स्वरूपज्ञान असम्पूर्ण है—मनोनिवेश और विज्ञानचर्चासे ज्ञानकी सीमा बढ़ती है—स्वरूप और निर्णय कठिन है, पर नियमनिर्णय अपेक्षाकृत सहज है ८९

६—ज्ञानलाभके उपाय ।
शिक्षा—शिक्षाके विषय—शारीरिक शिक्षा—पोशाक—व्यायाम—निद्रा और विश्राम—शारीरिक शिक्षाकी आवश्यकता ... ९५
मानसिकशिक्षा—नैतिकशिक्षा १०३
आत्मविज्ञान—गणित—मनोविज्ञान—जडविज्ञान—जीवविज्ञान १०६
नैतिकविज्ञान—भाषा—साहित्य और शिल्प—इतिहास—समाजनीति—अर्थनीति—राजनीति—व्यवहारनीति—धर्मनीति ... ११०
शिक्षाप्रणाली—वह भिन्नभिन्न देशों और समयोंमें कैसी थी—शिक्षाप्रणालीके कुछ नियम—शिक्षाके उद्देश्य—प्रयोजनीय ज्ञान और सर्वाङ्गीण उत्कर्षसाधन—विशेष ज्ञान—शिक्षा यथासाध्य सुखकर होना चाहिए—शिक्षार्थीकी शक्तिके अनुसार शिक्षा—जो कुछ सिखाया जाय अच्छी तरह सिखाया जाय—सब काम यथानियम और यथासमय करनेकी शिक्षा—भ्रमसंशोधन—शिक्षार्थीके लिए आत्मसंयम आवश्यक है—पहले वाचनिक और मातृभाषाशिक्षा आवश्यक है—क्रमशः पढ़ने लिखनेकी शिक्षा—रेखागणितकी शिक्षा—भाषा और रचना-शिक्षाके विशेष नियम—साहित्यिक और वैज्ञानिक रचनाप्रणाली—जातीयशिक्षा ... ११५
शिक्षाके सामान—शिक्षक—विद्यालय—छात्रनिवास—विश्वविद्यालय—पुस्तक—पाठ्यपुस्तकोंके आवश्यक गुण और दोष—पुस्तकालय—प्रेस—परीक्षायें १४०
अनुशीलन—उसके अनेक उद्देश्य—स्मृतिशक्तिकी वृद्धिके उपाय निकालना—भाषाशिक्षाके प्रशस्त उपाय निकालना—शाश्वतत्त्वोंको सरल प्रमाणोंसे सिद्ध करनेकी चेष्टा—वैद्यक और हकीमीकी औषधपरीक्षा—अपराधियोंका सुधार १५५

७—ज्ञानलाभका उद्देश्य ।

ज्ञानलाभका उद्देश्य—दुःखनिवृत्ति और सुखवृद्धि—ज्ञानलाभके फल—मादकद्रव्यसेवन—नई नई आवश्यकताओंको बढ़ाना सुखका कारण नहीं है—ज्ञानवृद्धिके बुरे फल—कुग्रन्थप्रचार—उच्छृंखलता और सामाजिक राजनैतिक विप्लव—जातीययुद्ध—जीवनसंग्रामको जीवनसख्यमें परिणत करना—स्वार्थ और परार्थका सामञ्जस्य—सच्चा स्वार्थ परार्थविरोधी नहीं है—ज्ञान इहलोक और परलोक दोनों ओर दृष्टि रखना बतलाता है— ... १६०

द्वितीयभाग—कर्म ।

उपक्रमणिका । १७९

१—कर्त्ताकी स्वतंत्रता ।

कार्य-कारणसम्बन्ध—इस सम्बन्धका मूलतत्त्व—कर्त्ताकी स्वतंत्रता—अस्वतन्त्रतावादके विरुद्ध आपत्ति—इस आपत्तिका खंडन—और एक आपत्ति—उसका खण्डन—अदृष्ट और पुरुषकार—अस्वतंत्रतावादका स्थूल मर्म—चेष्टा या प्रयत्न ... १८१

२—कर्तव्यताका लक्षण ।

कर्तव्यताके लक्षणकी आलोचना—सुखवाद—हितवाद—प्रवृत्तिवाद—निवृत्तिवाद—सामञ्जस्यवाद—न्यायवाद—सहानुभूतिवाद— १९६
न्यायवाद ही युक्तिसिद्ध है—कर्तव्यताके निर्णयका साधारण विधान—संकटस्थलमें कर्तव्यताका निर्णय—क्षमाशीलता कायरपन नहीं है—कर्तव्यताके गुरुत्वका तारतम्यनिरूपण ... २०४

३—पारिवारिक नीतिसिद्ध कर्म ।

पारिवारिक सम्बन्ध सब सम्बन्धोंकी जड़ है—विवाह—उसके अनेक रूप—विवाहसम्बन्ध किस तरहका होना चाहिए—बाल्यविवाहके प्रतिकूल युक्तियाँ—थोड़ी अवस्थाके विवाहके अनुकूल युक्तियाँ—विवाह-कालके बारेमें स्थूलसिद्धान्त—वर और

कन्याका चुनाव कौन करे ?—बहुविवाह ठीक नहीं—विवाहका समारोह—विवाहसम्बन्धका स्थितिकाल २२०
स्त्रीको शिक्षा देना—स्त्रीको सुखी रखना पर विलासप्रिय न बनने देना—स्वामीके प्रति स्त्रीका प्रेम और भक्ति—विवाहसम्बन्धका तोड़ना २३९
चिरवैधव्य विधवा-जीवनका उच्चादर्श है—प्रतिकूल और अनुकूल युक्तियाँ २४७
पुत्रकन्याके सम्बन्धमें कर्तव्यता—दासदासियोंपर भरोसा—रोगमें चिकित्सा और सेवासन्तानकी शिक्षा—आध्यात्मिक और नीतिशिक्षा—धर्मशिक्षा—पुत्रकन्याका विवाह २५७

४—सामाजिक नीतिसिद्ध कर्म।

सामाजिक नीति—साधारण समाजनीति—विशेष समाजनीति... २७६
जातीय समाज और उसकी नीति—हिन्दूसमाजमें जातिभेद—पड़ौसी समाज और उसकी नीति—एकधर्मावलम्बी समाज—धर्मानुशीलन समाज—ज्ञानानुशीलन समाज—सभ्य निर्वाचनकी विधि— २८६
धनी और मजदूरोंका सम्बन्ध—हड़ताल—एकहत्था व्यवसाय—वकील बैरिस्टरोंका कर्तव्य—चिकित्सकोंका कर्तव्य—गुरुशिष्यसम्बन्ध—प्रभुभृत्यसम्बन्ध और उसकी नीति ३०४

५—राजनीतिसिद्ध कर्म।

राजाप्रजासम्बन्धका स्थूल निर्णय—इसकी सृष्टिके विषयमें मतभेद—इसकी स्थिति ३२१
राजतन्त्र और राजाप्रजासम्बन्धके अनेक प्रकार—एकेश्वरतंत्र—विशिष्ट प्रजातंत्र—साधारण प्रजातंत्र—भिन्न भिन्न शासनप्रणालियोंके दोष गुण ३२९
ब्रिटेन और भारतका सम्बन्ध—प्रजाके प्रति राजाका कर्तव्य—राज्यकी शान्तिरक्षा—प्रजाकी प्रकृति और आवश्यकताओंका ज्ञान रखना—प्रजाकी स्वास्थ्यरक्षाका प्रबन्ध—जाने आनेके सुभीते—प्रजाकी शिक्षाका प्रबन्ध—प्रजाको अपना मतामत प्रकट करने

देना—करसंस्थापन—स्वदेशीशिल्पकी उन्नति—नशीली चीजोंका प्रचार रोकनेकी चेष्टा—राजाके प्रति प्रजाका कर्तव्य—राजाकी आज्ञा पालनीय है—एक जाति या राज्यका अन्य जाति या राज्यके प्रति कर्तव्य—असभ्योंके प्रति सभ्य जातियोंका कर्तव्य— ... ...

६—धर्मनीतिसिद्ध कर्म।

ईश्वर और परकालमें विश्वास—ईश्वरके प्रति मनुष्यका धर्मनीतिसिद्ध कर्म—विशेष कर्तव्य—नित्य उपासना—काम्य उपासना—मूर्तिपूजा और देवदेवियोंकी पूजा ... ...
मनुष्यके प्रति मनुष्यके कर्तव्य—साधारण और साम्प्रदायिक धर्मशिक्षणकी व्यवस्था करना—धर्मसंशोधन—हिन्दूधर्म-संशोधन मूर्तिपूजानिवारण—पूजामें पशुबलिनिवारण—बाल्यविवाह-निवारण—विधवाविवाहप्रचार—जातिभेदनिराकारण—कायस्थोंका उपनयन—विलायतसे लौटे हुए लोगोंको समाजमें ले लेना— ...

७—कर्मका उद्देश्य।

कर्मका उद्देश—पहले कर्ममें प्रवत्ति पीछे उससे निवृत्ति—सकाम और निष्काम कर्मी—निष्काम कर्मकी श्रेष्ठता—कर्मसे निष्कृति पानेसे क्या लाभ है? कर्मकी गति सुपथमुखी है— ...